विस्तृत प्रतिवेदन

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

विवेकानन्द जयन्ती समारोह

‘अच्छी शिक्षा, अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि’

12 जनवरी 2026

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, January 2026

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronic or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet

निदेशक की कलम से...

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी द्वारा आयोजित विवेकानन्द जयंती समारोह के उपलक्ष्य में मैं सभी अध्यापकों, कर्मचारियों तथा आमंत्रित अतिथियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। इस वर्ष का प्रेरक विषय "अच्छी शिक्षा, अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि" न केवल अत्यंत प्रासंगिक है, बल्कि हमारी शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं की जीवंतता को भी उजागर करता है। यह विषय हमें शिक्षा की गुणवत्ता, अध्यापक की भूमिका तथा समकालीन समय में आदर्श मार्गदर्शक के स्वरूप पर पुनर्विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को केवल सूचना-प्रदान या ज्ञान-संप्रेषण का माध्यम न मानकर, मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास का सक्रिय साधन *कहा है। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति में निहित दिव्यता, क्षमता और आत्मबल को जागृत करना है। वे बताते हैं कि आदर्श शिक्षक वही है जो विद्यार्थी की मौलिक सोच को पुष्ट करे, उसमें स्वाभिमान जगाए, और उसे सत्य, नैतिकता तथा रचनात्मक कर्म की दिशा में अग्रसर करे। चरित्र-निर्माण और आत्मानुशासन को उन्होंने शिक्षा का केंद्रीय तत्व माना है।*

आज जब विश्व तीव्र परिवर्तन, तकनीकी विस्तार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है, तब विवेकानन्द की शिक्षा-दृष्टि हमारे लिए और भी अधिक सार्थक व मार्गदर्शक सिद्ध होती है। आधुनिक युग में शिक्षा का लक्ष्य केवल रोजगारयुक्ति नहीं, बल्कि संवेदनशील, जिम्मेदार, नैतिक और नवोन्मेषी नागरिक तैयार करना भी है। ऐसे परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका बहुआयामी हो जाती है वह ज्ञान-*प्रदाता* के साथ-साथ मार्गदर्शक, प्रेरक, नवोन्मेषक, विचार-निर्माता और मूल्य-संरक्षक भी है।

मैं आशा करता हूँ कि यह समारोह सभी प्रतिभागियों को एक सार्थक चिंतन, उद्बोधन, संवाद और अनुसंधान की दिशा में प्रेरित करेगा। *स्वामी विवेकानन्द के विचारों पर आधारित यह मंच हमें शिक्षा के क्षेत्र में नए दृष्टिकोण विकसित करने, अध्यापन-पद्धतियों को सुधारे जाने तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सामूहिक प्रयासों को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।*

मैं इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और आयोजक मंडल के प्रति अपनी ओर से हार्दिक शुभेच्छा और बधाई प्रकट करता हूँ।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा और प्रेरणा हम सभी को उत्कृष्टता, चरित्र, सेवा और राष्ट्र-निर्माण के पथ पर निरंतर अग्रसर करती रहें, इसी आशा व विश्वास के साथ !

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक

शुभकामना संदेश

विवेकानन्द जयंती समारोह के अवसर पर मैं सभी सम्मानित अध्यापकों, कर्मचारियों तथा विशिष्ट अतिथियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। इस वर्ष समारोह का विषय 'अच्छी शिक्षा, अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि' हमारे शैक्षणिक दायित्वों और मूल्य-आधारित शिक्षण की अनिवार्यता को अत्यंत सारगर्भित रूप में प्रकट कर रहा है। यह विषय वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में शिक्षक की बदलती भूमिका और छात्रों के समग्र विकास के प्रश्नों पर गहन चिंतन का आमंत्रण देता है।

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षणिक दर्शन हमें स्मरण कराता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान का संग्रह या परीक्षाओं में सफलता नहीं है, बल्कि व्यक्ति के भीतर निहित शक्ति, विवेक, नैतिक चेतना तथा आत्मविश्वास का जागरण है। उनके विचार आज भी हमें प्रेरित करते हैं कि एक उत्कृष्ट शिक्षक वही है जो विद्यार्थियों को विषय-ज्ञान तो प्रदान करे ही, साथ ही उन्हें चरित्रवान, साहसी, संवेदनशील, आत्मनिर्भर तथा राष्ट्रोन्मुख व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा में सदैव प्रेरित करता रहे। शिक्षक का कार्य केवल सूचना देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों का संचार करना और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाना भी है। आज के परिवर्तनशील और बहुआयामी वैश्विक परिदृश्य में विवेकानन्द की शिक्षा-दृष्टि और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। शिक्षक अब केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं, बल्कि सृजनात्मक मार्गदर्शक, विचार-निर्माता, नवाचार-प्रेरक और मूल्य-संवर्धक के रूप में समाज और राष्ट्र की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में यह समारोह हमें विवेकानन्द के गहन शिक्षण-सिद्धांतों, उनकी प्रेरणादायी वाणी तथा आधुनिक युग में उनके विचारों की उपयोगिता पर पुनर्विचार करने का उपयुक्त मंच प्रदान करता है।

मैं इस आयोजन के सफल संचालन हेतु आयोजक मंडल, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की हृदय से सराहना करता हूँ। आशा करता हूँ कि यह आयोजन सभी प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी, चिंतन-समृद्ध एवं नई शैक्षणिक संभावनाओं से परिपूर्ण सिद्ध होगा। यह समारोह न केवल विवेकानन्द के जीवन-दर्शन को समझने का अवसर प्रदान करेगा, बल्कि शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य और सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति संवेदनशील बनाने में भी सहायक सिद्ध होगा।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	कार्यक्रम के बारे में	1
2.	अतिथि परिचय	2
3.	कार्यक्रम का विस्तृत विवरण	3-11
4.	आयोजन समिति	12
5.	समाचार पत्रों की झलकियाँ	13-15
6.	कार्यक्रम की झलकियाँ	16

कार्यक्रम के बारे में

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी द्वारा आयोजित विवेकानन्द जयंती समारोह का प्रमुख उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन, उनके आदर्शों तथा आधुनिक शिक्षक की भूमिका पर गहन, सारगर्भित और शोधपरक विमर्श का मंच प्रदान करना था। इस समारोह का विषय **"अच्छी शिक्षा, अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि"** समकालीन शैक्षणिक संरचना में उभर रही चुनौतियों, शिक्षण-पद्धतियों में नवाचारों तथा मूल्य-आधारित शिक्षा की तात्कालिक आवश्यकता को विशेष रूप से रेखांकित करता है।

कार्यक्रम के मूल उद्देश्यों में यह विचार स्पष्ट था कि शिक्षा का स्वरूप केवल ज्ञान-संप्रेषण या सूचना-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका वास्तविक लक्ष्य शिक्षार्थी के समग्र व्यक्तित्व-विकास, नैतिक परिष्कार, आत्मविश्वास, सृजनात्मक क्षमता तथा जीवन-कौशलों का निर्माण है। स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-दर्शन यह प्रेरणा देता है कि शिक्षक विद्यार्थियों में निहित आंतरिक संभावनाओं को पहचानें और उन्हें जीवन की विविध चुनौतियों के समुचित समाधान हेतु सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनाएं।

इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी था कि शिक्षकों और शोधार्थियों को ऐसी शिक्षण-पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए, जो शिक्षण-प्रक्रिया को अधिक बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक रूप से समृद्ध बनाती हैं। इस संदर्भ में शिक्षण के उद्देश्य, पद्धति, मूल्यांकन और शिक्षार्थी–शिक्षक संबंधों के विविध आयामों पर विचार-विमर्श किया गया।

समग्र रूप से यह कार्यक्रम शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा, चिंतन, संवाद और नवाचार का एक जीवंत मंच सिद्ध हुआ। इसने शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण और मानवीय विकास के एक प्रभावी, उत्तरदायी और परिवर्तनकारी साधन के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अतिथि परिचय

प्रो. पवन कुमार शर्मा

प्रो. पवन कुमार शर्मा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के राजनीतिक विज्ञान विभाग के प्रतिष्ठित प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष हैं, जिनके पास इस क्षेत्र में 25 वर्षों का समृद्ध शिक्षण अनुभव है। राजनीतिक विज्ञान एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने "राष्ट्रवाद का आर्थिक आयाम" तथा "शिक्षा का भारतीयकरण" जैसी महत्वपूर्ण कृतियों का लेखन किया है तथा "समग्र दृष्टि" पत्रिका के 10 अंकों का संपादन भी किया है। प्रो. शर्मा का शोध-कार्य प्राचीन भारतीय ग्रामीण संरचना से लेकर वाल्मीकि रामायण में वर्णित नारी की स्थिति जैसे विविध विषयों को समाहित करता है। वे अनेक शैक्षणिक बोर्डों एवं परिषदों के महत्त्वपूर्ण सदस्य के रूप में कार्यरत रहे हैं, जहाँ उन्होंने भारत की शैक्षिक नीतियों और मानकों के निर्माण एवं संवर्धन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

उनकी प्रशासनिक दक्षता भी उतनी ही प्रभावशाली है। उन्होंने विश्वविद्यालय में विभागीय नेतृत्व संभाला है तथा यूजीसी की विशेषज्ञ समितियों में सक्रिय भूमिका निभाई है। प्रो. शर्मा भारतीय शिक्षा-जगत एवं नीति-निर्माण की प्रक्रियाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रो. जय प्रकाश लाल

प्रो. जय प्रकाश लाल, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) के कुलाधिपति के रूप में कार्यरत हैं। वे भारत के प्रतिष्ठित कृषि वैज्ञानिकों में अग्रणी स्थान रखते हैं और काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में प्रोफेसर एमेरिटस के रूप में उनकी दीर्घकालिक सेवाएँ, शिक्षण तथा अनुसंधान के क्षेत्र में अनुपम योगदान प्रदर्शित करती हैं। कृषि विज्ञान के विभिन्न उपक्षेत्रों में उनके शोध, प्रकाशन और मार्गदर्शन ने भारतीय कृषि-ज्ञान-परंपरा को समृद्ध किया है, जिसके कारण वे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित विद्वानों की श्रेणी में आते हैं। कुलाधिपति के रूप में प्रो. लाल विश्वविद्यालय की गरिमा, परंपरा, और शैक्षणिक उच्चता के संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

कार्यक्रम विवरण

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (IUCTE), वाराणसी के संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने अपने स्वागत एवं वैचारिक संबोधन में उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों, विद्वानों, शिक्षकों, शोधार्थियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक अभिनंदन किया तथा राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

उन्होंने सभाध्यक्ष प्रो. प्रेम नारायण सिंह, मुख्य अतिथि प्रो. जयप्रकाश लाल तथा मुख्य वक्ता प्रो. पवन कुमार शर्मा का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए उनके शैक्षणिक योगदान, वैचारिक गहनता और शिक्षा-जगत में उनकी भूमिका को रेखांकित किया। प्रो. श्रीवास्तव ने प्रो. पवन कुमार शर्मा के साथ अपने प्राचीन शैक्षणिक संवादों को स्मरण करते हुए उन्हें एक ऐसे विद्वान के रूप में प्रस्तुत किया, जो असाधारण भाषिक कौशल, गंभीर चिंतन और सतत बौद्धिक संवाद की विशेषता रखते हैं।

अपनी वैचारिक प्रस्तुति में प्रो. श्रीवास्तव ने स्वामी विवेकानंद को "भारत का प्रथम वैश्विक ज्ञान-दूत (Global Knowledge Ambassador)" के रूप में अवस्थित करते हुए कहा कि 1893 का शिकागो भाषण केवल आध्यात्मिक उद्बोधन नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक ज्ञान-सत्ता को भारत द्वारा दी गई एक बौद्धिक चुनौती थी। उस मंच से भारत ने स्वयं को ज्ञान-सभ्यता के रूप में विश्व में प्रतिष्ठित किया।

विवेकानंद की शिक्षा-दृष्टि का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि विवेकानंद ने शिक्षा को सूचना-संचय नहीं, बल्कि "मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति" के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने स्वतंत्रता-उपरांत भारतीय शिक्षा व्यवस्था की यात्रा की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति (NEP) से पूर्व की शिक्षा प्रणाली पर्याप्त कौशल-विकास करने तथा शिक्षार्थियों में आत्मबोध (selfhood) विकसित करने में सफल नहीं रही।

इसके बाद प्रो. श्रीवास्तव ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के पाँच वर्षों के क्रियान्वयन को आधार बनाकर कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए-

- क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली कौशल के साथ आत्मबोध, उत्तरदायी बौद्धिकता और नैतिक चेतना को विकसित कर पा रही है?
- क्या हम केवल डिग्रीधारी स्नातक तैयार कर रहे हैं या "responsible intellectuals" का निर्माण भी कर रहे हैं?

उन्होंने विवेकानंद के कथन *"Slavish imitation is the worst form of knowledge"* का उल्लेख करते हुए विदेशी सिद्धांतों के अंधानुकरण के प्रति सचेत किया तथा यह कहा कि शिक्षा तब तक सार्थक नहीं हो सकती जब तक वह भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक यथार्थ से संवाद स्थापित न करे।

प्रो. श्रीवास्तव ने प्रतिपादित किया कि पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति एवं मूल्यांकन में नवाचार तभी प्रभावी होंगे जब वे भारतीय संदर्भों में निहित सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्शनिक आयामों से जुड़े होंगे। उन्होंने रैंकिंग-आधारित प्रतिस्पर्धा पर प्रश्न उठाते हुए कहा कि "विश्वगुरु" बनने की होड़ में कहीं हम मानवीय मूल्यों, संवेदनशीलता और चरित्र निर्माण के उद्देश्य को पीछे तो नहीं छोड़ रहे हैं।

प्रो. श्रीवास्तव ने समकालीन छात्र-समाज की मानसिक चुनौतियों- चिंता, तुलना, प्रतिस्पर्धात्मक असुरक्षा पर प्रकाश डालते हुए यह कहा कि हमारी शिक्षा प्रणाली यदि केवल "performance-driven" बनी रहेगी, तो विद्यार्थियों के भावनात्मक और नैतिक विकास की उपेक्षा होती रहेगी। उन्होंने "purpose-centered" और "meaning-centered" शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया और स्पष्ट किया कि Education 5.0 केवल डिजिटल प्रगति या कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विस्तार नहीं है, बल्कि Human intelligence और Ethical intelligence के संतुलित समन्वय का मॉडल है, जिसके लिए विवेकानंद के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं।

अपने संबोधन के समापन में प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद की जयंती केवल औपचारिक आयोजन या पुष्पांजलि का अवसर नहीं है, बल्कि मानसिक विमुक्ति (Mental decolonization) और शैक्षिक पुनर्संकल्प (Educational re-dedication) का दिवस है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि IUCE जैसे केंद्र विवेकानंद के आत्मविश्वास, सत्यनिष्ठा, सेवा-भाव और साहस के मूल्यों को आत्मसात कर भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा और गति प्रदान कर सकते हैं।

प्रो. पवन कुमार शर्मा

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. पवन शर्मा ने अपने विस्तृत, संदर्भसमृद्ध तथा दार्शनिक व्याख्यान में "अच्छी शिक्षा" और "अच्छे शिक्षक" की अवधारणा को भारतीय ज्ञान-परंपरा तथा स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन के आलोक में गहनता से विवेचित किया। अपने संबोधन के प्रारंभ में उन्होंने यह स्मरण कराया कि अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र की स्थापना (25 दिसंबर 2014) के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा

“अच्छी शिक्षा और अच्छे शिक्षक” को न केवल राष्ट्रीय आवश्यकता, बल्कि वैश्विक अनिवार्यता के रूप में प्रतिपादित किया गया था। प्रो. शर्मा ने कहा की स्वामी विवेकानंद का चिंतन इस विचार को सैद्धांतिक ऊँचाई देने के साथ-साथ व्यावहारिक और नैतिक आधार भी प्रदान करता है।

प्रो. शर्मा ने विवेकानंद को भारतीय परंपरा का “ऋषि-द्रष्टा” बताते हुए कहा कि उनका चिंतन कालबद्ध न होकर कालातीत है। उन्होंने इंगित किया कि अल्पायु में भी विवेकानंद ने शिक्षा, समाज, धर्म और राष्ट्र से जुड़े मूलभूत प्रश्नों पर जो दृष्टि प्रस्तुत की, वह आज भी समान रूप से प्रासंगिक है। उन्होंने विवेकानंद के साहित्यिक और दार्शनिक ग्रंथों के विभिन्न खंडों का उल्लेख करते हुए यह स्थापित किया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 मूलतः विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का समकालीन विस्तार है, न कि कोई नवीन या असंबद्ध अवधारणा।

अपने वक्तव्य में प्रो. शर्मा ने गुरु शिष्य परंपरा को भारतीय शिक्षा की आत्मा के रूप में रेखांकित किया तथा स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के संबंध को इसका आदर्श उदाहरण बताया। उन्होंने स्पष्ट किया कि विवेकानंद के अनुसार श्रेष्ठ शिक्षक वह है, जो केवल वाणी के माध्यम से ज्ञान प्रदान न करे, बल्कि अपने आचरण, चरित्र, मौन और जीवन-दृष्टि द्वारा शिक्षार्थी के अंतर्मन को रूपांतरित कर दे। शिक्षक का कार्य सूचना-संचय नहीं, बल्कि शिक्षार्थी में निहित पूर्णता को जाग्रत करना है। इस संदर्भ में उन्होंने ‘शब्द-जाल’ की आलोचना करते हुए कहा कि शब्द शिक्षण का साधन हैं, किंतु शिक्षक को स्वयं उनमें उलझना नहीं चाहिए।

प्रो. शर्मा ने विवेकानंद के प्रसिद्ध कथन *“Education is the manifestation of the perfection already in man”* को उद्धृत करते हुए शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट किया। उनके अनुसार शिक्षा बाह्य आरोपण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के भीतरी गुणों और संभावनाओं के प्रकटीकरण की यात्रा है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आलोचनात्मक समीक्षा करते हुए कहा कि डिग्री-केंद्रित और रोजगार-प्रधान शिक्षा वर्तमान समय में चरित्र निर्माण नहीं कर रही, और न ही आत्मनिर्भर, निर्भीक तथा नैतिक नागरिक तैयार कर पा रही है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका अर्जित करना नहीं, बल्कि जीवन की सार्थकता का बोध कराना है।

अपनी प्रस्तुति में उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा का सर्वोपरि लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। विनम्रता, आत्मसंयम, उत्तरदायित्व और करुणा जैसी मानव-मूल्य-प्रधान गुणों के बिना शिक्षा अधूरी है। शिक्षा को जीवनोपयोगी कौशलों से युक्त एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाली बताया गया, ताकि शिक्षार्थी जीवन के प्रत्यक्ष और व्यावहारिक क्षेत्रों में सक्षम हो सके। उन्होंने यह भी कहा कि विवेकानंद के अनुसार सच्चे शिक्षित व्यक्ति की पहचान उसके आत्मविश्वास और निर्भीकता से होती है, वह सत्य के पक्ष में दृढ़तापूर्वक खड़ा हो सके।

प्रो. शर्मा ने शिक्षा के सामाजिक आयाम पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा का प्रसार समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए। गरीब, वंचित तथा स्त्री वर्ग की शिक्षा के बिना राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। उन्होंने विवेकानंद के स्त्री-शिक्षा संबंधी विचारों का उल्लेख किया और कहा कि स्त्री केवल परिवार का अंग नहीं, बल्कि समाज का केंद्र है; अतः उसकी शिक्षा पूरे सामाजिक ढाँचे को प्रभावित करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की समग्रता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में शिक्षा कभी खंडित नहीं रही; वह सदैव दर्शन, सिद्धांत और व्यवहार का एकीकृत स्वरूप रही है। औपनिवेशिक काल में उत्पन्न संकीर्ण व्याख्याओं और वर्गीकृत दृष्टिकोणों की उन्होंने आलोचना की तथा विवेकानंद की प्रवाहशील, सर्वमान्य और मानवतावादी शिक्षा दृष्टि को उसका विकल्प बताया। उनके अनुसार विवेकानंद कर्मकांड के विरोधी थे, परंतु भारतीय परंपरा के मूल मानवीय मूल्यों के दृढ़ समर्थक थे।

अपने वक्तव्य में प्रो. शर्मा ने शिक्षा को मानव-निर्माण और समाज-सेवा का माध्यम बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा मनुष्य के भीतर संवेदना, सहानुभूति और परोपकार की भावना उत्पन्न नहीं करती, तो वह अपने उद्देश्य में विफल है। उन्होंने महाप्रभु चैतन्य के जीवन-प्रसंग का उल्लेख करते हुए तर्क प्रस्तुत किया कि सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को दूसरे के दुःख से तादात्म्य स्थापित करना सिखाए।

अंत में प्रो. पवन शर्मा ने इस विचार को प्रतिपादित किया कि विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी तीनों का अंतिम लक्ष्य मानवीय चेतना का उत्कर्ष है। उन्होंने आह्वान किया कि यदि "अच्छी शिक्षा और अच्छे शिक्षक" का संकल्प साकार करना है, तो विवेकानंद के आत्मविश्वास, साहस, सेवा और अध्यात्म-आधारित शिक्षा दर्शन को नीतिगत स्तर से आगे बढ़ाकर व्यवहार में लाना अनिवार्य है।

प्रो. जयप्रकाश लाल

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. जयप्रकाश लाल ने अपने विस्तृत एवं गंभीर चिंतनपरक संबोधन में भारतीय शिक्षा-दर्शन, युवाओं की ऐतिहासिक भूमिका, राष्ट्रीय पुनर्जागरण तथा समकालीन शैक्षिक चुनौतियों पर गहन अकादमिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य की भूमिका में पूर्व वक्ता प्रो. पवन कुमार शर्मा द्वारा प्रस्तुत विचारों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा, शिक्षक एवं अधिगम प्रक्रिया से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण

पक्षों पर व्यापक विवेचन पहले ही किया जा चुका है। इसलिए उन्होंने विषय की पुनरावृत्ति से बचते हुए कुछ पूरक, संदर्भात्मक एवं वैचारिक आयामों को सामने रखने का प्रयत्न किया।

अपने संबोधन में उन्होंने राष्ट्रीय युवा दिवस को स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक एवं सामाजिक दर्शन के संदर्भ में विश्लेषित किया। उन्होंने प्रतिपादित किया कि विवेकानंद ने युवाओं को राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला माना और उनमें शारीरिक सामर्थ्य, मानसिक प्रखरता तथा नैतिक दृढ़ता के संतुलित विकास को अत्यंत आवश्यक बताया। उनके अनुसार युवा केवल समाज की दिशा निर्धारित नहीं करते, बल्कि दीर्घकालीन राष्ट्रीय लक्ष्य एवं दृष्टि के वास्तविक वाहक भी होते हैं।

प्रो. लाल ने विवेकानंद की “Power of Mind” की अवधारणा का विशद् विवेचन करते हुए कहा कि सामान्यतः मानव मस्तिष्क की अंतर्निहित क्षमताओं का अत्यंत सीमित उपयोग ही हो पाता है। भारतीय परंपरा में योग, प्राणायाम, ध्यान, आत्मअनुशासन और संवेग-नियंत्रण की विधियाँ मानसिक एकाग्रता, संज्ञानात्मक क्षमता तथा आत्मविश्वास में वृद्धि करती हैं। उन्होंने विवेकानंद की अद्भुत स्मरणशक्ति, त्वरित बौद्धिक प्रतिक्रियाशीलता और सूक्ष्म विश्लेषण शक्ति का संदर्भ देते हुए इस सिद्धांत की व्यवहारिक पुष्टि प्रस्तुत की।

उन्होंने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट किया कि भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्वरूप आध्यात्मिकता, वेदांत तथा अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित रहा है। भारत ने विश्व को सैन्य या राजनीतिक वर्चस्व के माध्यम से नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के माध्यम से प्रभावित किया है। इसी संदर्भ में उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) को भारतीय शैक्षिक मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं पुनर्परिभाषा की दिशा में एक महत्वपूर्ण वैचारिक पहल बताया।

अपने वक्तव्य में प्रो. लाल ने सामाजिक विषमता, छुआछूत और गरीबी को भारत के ऐतिहासिक विकास की प्रमुख बाधाएँ बताया। विवेकानंद के सामाजिक चिंतन को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के बिना राष्ट्र की वास्तविक प्रगति संभव नहीं है। उन्होंने “दरिद्र नारायण” की अवधारणा को

सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय कर्तव्य का आधार बताते हुए कमजोर-वर्ग सशक्तिकरण को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का अनिवार्य घटक बताया।

आगे उन्होंने युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित तीन प्रमुख जीवन-सिद्धांतों को विशेष रूप से रेखांकित किया-

1. असफलता से निर्भीक रहना,
2. अनावश्यक आलोचना से अप्रभावित रहना,
3. संघर्ष को रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करना।

उन्होंने एकाग्रता को शैक्षणिक सफलता, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविकास का आवश्यक अंग बताते हुए आत्मचिंतन, नियमित दिनचर्या और अनुशासित जीवनशैली के महत्व पर बल दिया।

अपने समापन वक्तव्य में प्रो. जयप्रकाश लाल ने यह विश्वास व्यक्त किया कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत ज्ञान, नैतिकता और शिक्षा-क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखता है। यह लक्ष्य तभी प्राप्त हो सकता है जब हमारी शिक्षा व्यवस्था चरित्र निर्माण, आत्मबल, सामाजिक संवेदनशीलता और भारतीय मूल्यबोध पर आधारित हो। उन्होंने शिक्षकों एवं युवाओं से आह्वान किया कि वे विवेकानंद के विचारों को व्यवहार में उतारते हुए राष्ट्र एवं विश्व समाज के सकारात्मक परिवर्तन में सक्रिय योगदान दें।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र ने अपने उद्बोधन में स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर आयोजित इस सार्थक अकादमिक समारोह की

समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि विवेकानंद का संपूर्ण चिंतन आशावाद, आत्मविश्वास, मानवीय उत्थान और चरित्र-निर्माण पर आधारित है। यदि हम विवेकानंद को अपने विचार और कर्म का मार्गदर्शक मानते हैं, तो प्रथम शर्त आशावादी होना है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि समाज में कोई भी मूल्य या अच्छाई कभी पूरी तरह समाप्त नहीं होती; समय के साथ उस पर केवल उपेक्षा की परत जम जाती है, जिसे शिक्षा, संवाद और सतत प्रयास के माध्यम से पुनः प्रकाशित किया जा सकता है।

अपने संबोधन में उन्होंने संस्थान की एक महत्वपूर्ण अकादमिक उपलब्धि का उल्लेख करते हुए बताया कि लंबे समय से प्रयासरत अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र का ई-जर्नल *'प्रमा'* आज औपचारिक रूप से प्रकाशित हुआ है। इसे उन्होंने संस्थान के बौद्धिक जीवन की एक नई और महत्त्वपूर्ण शुरुआत बताते हुए कहा कि यह शुभ कार्य स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर से अधिक उपयुक्त तिथि पर संभव नहीं था। उन्होंने सभी विद्वानों एवं शोधार्थियों से अपेक्षा व्यक्त की कि वे अपने मार्गदर्शन, रचनात्मक सुझावों और शैक्षणिक योगदानों से इस पत्रिका को निरंतर समृद्ध करते रहेंगे। इसी क्रम में उन्होंने एक शोध-ग्रंथ के विमोचन का भी उल्लेख किया और कहा कि संस्थान में शोध केवल उपाधि प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि विद्वान के बौद्धिक, नैतिक और व्यक्तित्वगत रूपांतरण की प्रक्रिया है।

प्रो. सिंह ने अपने दो पूर्व विद्यार्थियों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए गुरु-शिष्य परंपरा की सजीवता को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि सेवा-क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थी भी दृढ़ निश्चय, सतत श्रम और गुरु-विश्वास के आधार पर उन्नत उच्च शिक्षा एवं अध्यापन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना सकते हैं। उन्होंने बलपूर्वक कहा कि जब कोई विद्यार्थी दृढ़ विश्वास के साथ कहता है "मेरी नियुक्ति कोई नहीं रोक सकता" तो यही आत्मविश्वास शिक्षा की सबसे बड़ी उपलब्धि बन जाता है। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ज्ञान-संचय नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और साहस का निर्माण है।

स्वामी विवेकानंद के विचारों का संदर्भ लेते हुए प्रो. सिंह ने कहा कि विवेकानंद मनुष्य को दो श्रेणियों में विभाजित करते हैं-

1. उत्तम
2. निकृष्ट

तथा चार अनिवार्य गुणों पर बल देते हैं:

1. आशावान होना
2. दृढ़ इच्छाशक्ति
3. शारीरिक एवं मानसिक बल
4. साधु गुण अर्थात नैतिक संतुलन

उन्होंने स्पष्ट किया कि शक्ति, साहस और महत्वाकांक्षा तभी सार्थक हैं जब उनके साथ नैतिक संतुलन जुड़ा हो, अन्यथा ये गुण समाज के लिए विनाशकारी भी बन सकते हैं। राम और रावण का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि समाज उसी को स्वीकार करता है जो अपनी शक्तियों का उपयोग लोककल्याण और मानवता के हित में करता है।

उन्होंने 'मोरल कैंपस' की अवधारणा पर बल देते हुए कहा कि नैतिकता का प्रथम आधार परिवार है। परिवार के बाद विद्यालय और विश्वविद्यालय आते हैं, जहाँ शिक्षक का आचरण विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण में निर्णायक होता है। शिक्षक केवल विषय-वस्तु का संप्रेषक नहीं बल्कि मूल्य, संस्कार और जीवन-दृष्टि का संवाहक होता है। विद्यार्थियों का व्यवहार और दृष्टिकोण प्रायः उसी आदर्श का विस्तार होता है जिसे वे अपने शिक्षक में देखते हैं।

अपने उद्बोधन में उन्होंने यह भी कहा कि 'अच्छी शिक्षा' और 'अच्छे शिक्षक' को पृथक नहीं किया जा सकता; दोनों परस्पर आश्रित हैं। अच्छी शिक्षा संभव तभी है जब शिक्षक उत्कृष्ट हो, और उत्कृष्ट शिक्षक वही बनता है जो ऐसे शैक्षिक परिवेश में कार्य करे जहाँ उद्देश्य मानवीय, मूल्य-आधारित और विश्वासपूर्ण हो। भारतीय चिंतन परंपरा में भले ही पद्धतियाँ भिन्न हों, परंतु मूल भाव एक ही है- बालक की अंतर्निहित अच्छाई और संभावनाओं में विश्वास।

विवेकानंद के विचारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि सर्वोत्तम विद्यार्थी वही है जिसमें जिज्ञासा हो। उपनिषदों में वर्णित उस जिज्ञासा का उदाहरण देते हुए, जिसमें शिष्य प्रश्न करता है कि कौन-सा ज्ञान ऐसा है जिसे जान लेने के बाद सब कुछ ज्ञात हो जाता है, उन्होंने कहा कि यही जिज्ञासा शिक्षा का प्राणतत्त्व है। इस जिज्ञासा को दिशा देने के लिए श्रद्धा, विश्वास और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा अत्यंत आवश्यक हैं; इन्हीं के आधार पर विद्यार्थी में आत्मविश्वास का विकास होता है।

अंत में प्रो. सिंह ने सभी अतिथियों, विद्वानों, शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। मुख्य अतिथि प्रो. जयप्रकाश लाल और मुख्य वक्ता प्रो. पवन कुमार शर्मा के प्रति उन्होंने विशेष कृतज्ञता व्यक्त की कि उनके विचारों ने इस कार्यक्रम को बौद्धिक ऊँचाई प्रदान की। सभी प्रतिभागियों के समय, धैर्य और मनोयोगपूर्ण सहभाग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उन्होंने राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की।

इस महनीय अवसर पर अतिथियों द्वारा **'प्रमा'** पत्रिका के प्रथम अंक का विधिवत लोकार्पण संपन्न हुआ, जिसके साथ ही डॉ. राजेश कुमार यादव द्वारा रचित पुस्तक **'शैक्षिक मनोविज्ञान'** का अनावरण भी किया गया।

उपस्थित प्रबुद्ध जनों ने शोध पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादन मंडल के समस्त सदस्यों तथा सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई प्रेषित की।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ माता सरस्वती, महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय एवं स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संचालन एवं मंगलाचरण डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी, स्वागत भाषण संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक ने किया। इस कार्यक्रम में अन्य शैक्षणिक संस्थानों के अध्यापकों एवं छात्रों सहित केन्द्र के सभी अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचरियों की उपस्थिति रही।

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह,

निदेशक, अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी

मार्गदर्शक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ.सुनील कुमार त्रिपाठी

सहायक आचार्य, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

तकनीकी टीम

श्री कुलदीप पाण्डेय, सिस्टम विश्लेषक

श्री राणा प्रताप राव, हार्डवेयर इंजीनियर

श्री विकास जानू, वेबमास्टर

श्री आनंद जायसवाल, सर्वर इंजीनियर

श्री अभिज्ञान कुमार श्रीवास्तव, तकनीशियन (सॉफ्टवेयर प्रबंधन)

श्री शुभम प्रजापति, तकनीकी सहायक (मल्टीमीडिया)

श्री अनुभव पाण्डेय, कन्सल्टेन्ट एडिटर (मल्टीमीडिया प्रोडक्सन)

प्रशासनिक टीम

डॉ. एस.पी. माथुर, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

डॉ. अनिल कुमार सिंह, एसओ (प्रशासन)

श्री ब्रिजेन्द्र सरकार, सहायक

श्री आनंद कुमार यादव, एलडीसी

लेखा अनुभाग

श्री एम.आर. रामसुब्रमण्यम, प्रशासनिक अधिकारी (वित्त)

डॉ. विजय कुमार राय, सहायक

सुश्री पूजा सिंह, एलडीसी

सुश्री नेहा पटेल, एलडीसी

समाचार पत्रों की झलकियाँ

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में विवेकानंद जयंती समारोह मनाया गया

सुशील कुमार चौरसिया
वाराणसी/वशिष्ठ वाणी। ...ुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी ...कानंद की दृष्टिविषय पर एक ...क्रम का आयोजन किया गया। ...क्रम की शुरूआत मंगलाचरण से ... जिसे डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी प्रस्तुत किया गया। इसके उपरांत ... प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती, ...मना पंडित मदन मोहन मालवीय एवं स्वामी विवेकानंद जी की ...मा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। ...क्रम के मुख्य अतिथि प्रो. जय ...श लाल, कुलाधिपति, झारखंड ...य विश्वविद्यालय, झारखंड रहे। ...अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में ... पवन कुमार शर्मा, आचार्य, ...नीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण ... विश्वविद्यालय, मेरठ रहे। ...क्रम की अध्यक्षता प्रो. प्रेम

नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई, वाराणसी ने की। प्रो. आशीष श्रीवास्तव, डीन (शैक्षणिक एवं अनुसंधान) आईयूसीटीई, वाराणसी ने स्वागत उद्बोधन किया।

मुख्य अतिथि प्रो. जय प्रकाश लाल, कुलाधिपति, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, झारखंड ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के अनुसार युवाओं में तीन प्रमुख गुणः आत्मबल एवं आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण और शिक्षा, तथा मानवता की निःस्वार्थ सेवा, अवश्य होने चाहिए। उन्होंने हृपावर ऑफ माइंडह्व पुस्तक का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे मानसिक शक्ति, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच विकसित करने की प्रेरणा मिलती है। साथ ही उन्होंने युवाओं से स्वामी विवेकानंद के विचारों को जीवन में अपनाकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता प्रो. पवन कुमार शर्मा, आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ ने कहा कि स्वामी विवेकानंद सही मायनों में एक महान द्रष्टा थे। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 मूलतः स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचारों का ही प्रसार है। उनके अनुसार सच्चा शिक्षक वह होता है जो अहंकार से मुक्त हो, जिसका अपना कुछ न हो और जो विद्यार्थी के मन को पढ़ सके। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई, वाराणसी ने सभी का अभिनंदन करते हुए कहा कि जब शिक्षक अच्छा होगा तभी शिक्षा अच्छी होगी, और अच्छा ... होना आवश्यक है, ये दोनों बातें एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

इस अवसर पर हृप्रमा जर्नल के प्रथम संस्करणह्व का उद्घाटन तथा हृशैक्षिक मनोविज्ञानह्व नामक पुस्तक का अनावरण किया गया। विद्वज्जनों ने प्रमा जर्नल के प्रथम संस्करण के प्रकाशन पर संपादक मंडल के सभी सदस्यों तथा सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष को हार्दिक बधाई दी। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, आईयूसीटीई द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में प्रो. दीनानाथ, प्रो. के. के. शर्मा, प्रो. संजीव आचार्य, डॉ. राजेश कुमार यादव, डॉ. दिनेश कुमार एवं डॉ. संतोष पटेल सहित विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों के गणमान्य शिक्षाविद् तथा केंद्र के अन्य समस्त संकाय सदस्य एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

दैनिक वशिष्ठ वाणी, Page 3, 13 January 2026

आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानंद की दृष्टि विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। - Kohram News India 24

आज 13 जनवरी 2026 को अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र आईयूसीटीई वाराणसी में विवेकानंद जयंती समारोह के उपलक्ष्य में अच्छी शिक्षा अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक

kohramnewsindia24.in

आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानंद की दृष्टि विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

✍✍✍✍✍✍✍✍✍

https://kohramnewsindia24.in/आधुनिक-मार्गदर्शक-के-रूप/

प्रधान संपादक मोहम्मद फहीम

✍✍✍✍✍✍✍✍✍

Home / वाराणसी/उत्तरप्रदेश / अच्छी शिक्षा,अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानंद की दृष्टि" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन

वाराणसी/उत्तरप्रदेश

अच्छी शिक्षा,अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानंद की दृष्टि" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन

Photo of Sallauddin Ali Sallauddin Ali · 12/01/2026 · 0 · 114 · 2 minutes read

[अच्छी शिक्षा,अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानंद की दृष्टि" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन » Aira News Agency]

बहुआयामी-समाचार

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई), वाराणसी में विवेकानंद जयंती समारोह।

By MD News(Multidimensional News)

JAN 12, 2026

https://mdnews.co.in/?p=77104

आईयूसीटीई वाराणसी में विवेकानंद जयंती पर शिक्षा और शिक्षक की भूमिका पर संगोष्ठी || AARCC LIVE NEWS || VARANASI

जनवरी 12, 2026

शेयर करें

[आईयूसीटीई वाराणसी में विवेकानंद जयंती पर शिक्षा और शिक्षक की भूमिका पर संगोष्ठी || AARCC LIVE NEWS || VARANASI]

12 Jan 2026 18:39:53

वाराणसी, 12 जनवरी(हि. स.)।अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आईयूसीटीई) में विवेकानंद जयंती समारोह के उपलक्ष्य में "अच्छी शिक्षा, अच्छे शिक्षक: आधुनिक मार्गदर्शक के रूप में स्वामी विवेकानंद की दृष्टि" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसे डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके उपरांत दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एवं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. जय प्रकाश लाल, कुलाधिपति, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय रहे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. पवन कुमार शर्मा, आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई, वाराणसी ने की। प्रो. आशीष श्रीवास्तव, डीन (शैक्षणिक एवं अनुसंधान) आईयूसीटीई, वाराणसी ने स्वागत उद्बोधन किया।

[पावर ऑफ माइंड पुस्तक से मानसिक शक्ति, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच होती है विकसित : कुलाधिपति - हिन्दुस्थान समाचार]

कार्यक्रम की झलकियाँ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in